१ थिस्सलुनीकियों

(1 Thessalonians)

१ थिस्सलुनीकियों (1 Thessalonians)

१ **पौलुस** और सिलवानुस और तीमुथियुस की ओर से थिस्सलुनीकियों की कलीसिया के नाम जो परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु
२ मसीह में है, अनुग्रह और शान्ति तुम्हें मिलती रहे । **हम** अपनी प्राथनाओं में तुम्हें स्मरण करते और सदा तुम सब के विषय
३ में परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं । **हम** अपने परमेश्वर और पिता के सामने तुम्हारे विश्वास के काम, और प्रेम का परिश्रम,
४ और हमारे प्रभु यीशु मसीह में आशा की धीरता को लगातार स्मरण करते हैं । **हे भाइयो,** परमेश्वर के प्रिय लोगो हम
५ जानते हैं, कि तुम चुने हुए हो; **क्योंकि** हमारा सुसमाचार तुम्हारे पास न केवल शब्द मात्र ही में वरन् सामर्थ और पवित्र आत्मा,
६ बड़े निश्चय के साथ पहुंचा था । तुम जानते हो, कि हम तुम्हारे, लिये तुम में कैसे बन गए थे । **तुम** बड़े क्लेश
७ में पवित्र आत्मा के आनन्द के साथ वचन को मानकर हमारी और प्रभु की सी चाल चलने लगे । **इसलिए** तुम मकिदुनिया
८, और अखया के सब विश्वासियों के लिये आदर्श बने । **क्योंकि** तुम्हारे यहां से न केवल मकिदुनिया और अखया में प्रभु
का वचन सुनाया गया, लेकिन तुम्हारे विश्वास की जो परमेश्वर पर है, हर जगह ऐसी चर्चा फैल गई है कि हमें कहने की

अध्याय १

१:१ - ***"पौलुस"*** - प्रेरित ८:१-३; १३:६ "सिलवानुस और सीलास एक ही व्यक्ति हैं -प्रेरित १५:२२,४० ।

"तिमोथी"- प्रेरित १६:१-४ सीलास (और सभवतः तिमोथी) पौलुस के साथ कलीसिया के आरम्भ के समय में थे- प्रेरित १७:१-४, १०-१४ ।

"जो परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु मसीह में है"; - परमेश्वर में दो व्यक्तियों के एक होने की सत्यता को दिखाता है (मत्ती ३:१६, १७, २८:१९; यूहन्ना १०:३०, १७:१-५, फिलि. २:६) । विश्वासी परमेश्वर "में" हैं । वह उनके शरणस्थान, उनके घर और उनके आत्मिक जीवन का स्त्रोत हैं । तुलना करें भजन ९०:१; कुलु. ३:३ ।

१:२ - *"धन्यवाद"*- रोमि. १:८; १ कुरू. १:४; फिलि. १:८; कुल. १:३

"अपनी प्रार्थनाओं" - रोमि. १:९,१०; इफि. १:१६; ३:१६; फिलि. १:४,९; कुलु. १:३,९; २:१ ।

१:३ - *"यहाँ"* मसीही जीवन के तीन बड़े गुण हैं और यह भी कि उनसे क्या उत्पन्न होता है। सच्चा विश्वास अच्छे कार्य पैदा करता है । देखें याकूब २:१४-१७,२६ । यहाँ यूनानी शब्द *"प्रेम" "अगापे"* है । इसे समझाने के लिए १कुरू. १३:१-१३ का अध्ययन करें । यह क्या उत्पन्न करता है, इससे ही प्रेम जाना जा सकता है और इसके व्यवहार से सच्चा प्रेम सदा दूसरों के लिए और मसीह के लिए परिश्रम करने के लिए तैयार रहता है ।

"आशा" रोमि. ५:२-५; ८:२४,२५ देंगे । इसलिए कि उनकी आशा परमेश्वर पर स्थिर है, जिसे उन्हें अनन्त जीवन की प्रतिज्ञा दी है - तीतुस १:२ ।

१:४ - ***"जानते हैं"*** - उनके सच्चे विश्वासी होने का, प्रमाण सचमुच में बहुत अधिक था, जिससे पौलुस को निश्चय हुआ कि अनन्त जीवन के लिए परमेश्वर ने उसे चुना है ।

"प्रिय लोगो" - रोमि ५:८, इफि ३:१८,१९; कुलु ३:१२, १यूहन्ना ३:१

"चुने हुए हो" - मरकुस १३:२०; यूहन्ना १३:१८; १५:१९; रोमि ८:३३, इफि. १:४,५,११; १ पत १:२; २:९ ।

१:५-१०-ये पद इस बात का प्रमाण हैं जिससे पौलुस को उनके उध्दार की निश्चयता मिली । पहली बार जब उसने संदेश सुनाया, उसने पवित्र आत्मा का अनुभव किया । उनमें हुए परिवर्तनों को देखा । यह परिवर्तन ऐसा था जो सताव में भी बना रहा । इससे मालूम होता है कि मसीह के लिए उनकी गवाही सत्य और सरगर्मी के साथ थी ।

१:५ - ***"हमारा शुभ संदेश"*** - जिस संदेश को उन्होंने फैलाया उसे यीशु मसीह ने प्रगट किया था (२:८; ३:२; गलति. १:११,१२; रोमि. १:१६; १ कुरू. १५:१-८)

"सामर्थ में" - प्रेरित १:८; १ कुरि २:४,५; कुलु १:२९

"पवित्र आत्मा में" - मत्ती ३:१६,१७; यूहन्ना १४:१६,१७; प्रेरित १:४; इफि ५:१८ । परमेश्वर के आत्मा के वातावरण में पौलुस जीवन जीता था और दूसरों की सेवा किया करता था ।

"बड़े निश्चय के साथ " - वह और वे दोनों ही इस बात के कायल थे, कि परमेश्वर उनके बीच में कार्य कर रहे हैं ।

"कैसे" - २:५-१२ । प्रेरित २०:१८-२०, ३३-३५ से तुलना करें ।

१:६ - ***"हमारी या प्रभु की सी चाल"*** मसीही अगुवों को ऐसे जीना चाहिए कि सभी सावधानी से उनका अनुकरण करें । १ कुरि. ४:१६; ११:१; फिलि. ३:१७; २ थिस्स ३:७,९; १ तिमु १:१६; ४:१२; तीतुस २:७; इब्रा. ६:१२; १३:७; १ पत. ५:३ ।

"बडे क्लेश" - २:१४; प्रेरित १७:५-१० । इस बात से उन्होंने शुभसंदेश से अपना मुँह नहीं मोड़ा । परमेश्वर ने जिन्हें चुना है वे लोग अपने मार्ग से कभी नहीं भटकेंगे ।

"आनन्द" - प्रेरित ८:८; १३:५२; १६:३४; रोमि. १४:१७। जो लोग शुभसंदेश पर विश्वास करते हैं, उन्हीं के जीवन में परमेश्वर का आत्मा आनन्द उत्पन्न कर सकता है ।

१:७ - ***"आदर्श"*** संसार के सबसे बड़े व्यक्ति को आदर्श बनाकर, सभी विश्वासियों के लिए वह एक आदर्श बन गया (१कुरि. ११:१) । वे पौलुस के समान जीवन जीने लगे और दूसरों के लिए भी आदर्श बन गए ।

"मकिदुनिया और अखया" जिसे आज यूनान जाना जाता है, उस समय थिस्सलुनीके और मकिदुनिया में आते थे ।

१:८ ***"हर जगह ऐसी चर्चा फैल गयी है"*** जैसा सभी विश्वासियों को होना चाहिए, वे खुले रूप में मसीह के गवाह थे ।

९ आवश्यकता ही नहीं । **क्योंकि** वे आप ही हमारे विषय में बताते हैं कि तुम्हारे पास हमारा आना कैसा हुआ; और तुम क्यों
१० मूरतों से परमेश्वर की ओर फिरे ताकि जीवित और सच्चे परमेश्वर की सेवा करो । **और** उनके पुत्र के स्वर्ग पर से आने
२ की बाट जोहते रहो जिसे उन्होंने ने मरे हुओं में से जिलाया, अर्थात् यीशु की, जो हमें आनेवाले दण्ड से बचाते हैं । **हे** भाइयो,
२ तुम आप ही जानते हो कि हमारा तुम्हारे पास आना बेकार न हुआ । **जैसा कि** तुम जानते हो, कि पहिले फिलिप्पी
में दुःख उठाने और उपद्रव सहने पर भी हमारे परमेश्वर ने हमें ऐसी हिम्मत दी कि हम परमेश्वर का शुभसंदेश भारी विरोधों के
३,४ होते हुए भी तुम्हें सुनाएं । **क्योंकि** हमारा उपदेश न भ्रम से है और न अशुध्दता से, और न छल के साथ । **किन्तु** जैसा परमेश्वर
ने हमें योग्य ठहराकर शुभसंदेश सौंपा, हम वैसा ही हम बताते हैं; और इस में मनुष्यों को नहीं, परन्तु परमेश्वर को, जो
५ हमारे मनों को जांचते हैं, प्रसन्न करते हैं । **जैसा कि** तुम जानते हो, कि हम न तो कभी चापलूसी की बातें किया करते थे,
६ और न लोभ के लिये बहाना करते थे । परमेश्वर हमारे गवाह हैं । **हालांकि** हम मसीह के प्रेरित होने के कारण तुम पर बोझ डाल
७ सकते थे, तौभी हम मनुष्यों से आदर नहीं चाहते थे, और न तुम से, न और किसी से । **परन्तु** जिस तरह माता अपने बालकों
८ का पालन-पोषण करती है, वैसे ही हम ने भी तुम्हारे बीच में रहकर कोमलता दिखाई है; **और** वैसे ही हम तुम्हारी लालसा
करते हुए, न केवल परमेश्वर का सुसमाचार, पर अपना अपना प्राण भी तुम्हें देने को तैयार थे, इसलिये कि तुम हमारे लिए
९ कीमती हो गए थे । **हे भाइयो**, तुम हमारे परिश्रम और कष्ट को स्मरण रखते हो, कि हम ने इसलिये रात दिन

१:९- ***"मूरतों"***-वहाँ अधिक विश्वासी गैर यहूदी थे जैसा अभी भी है । उस समय भी मूर्तिपूजा एक आम बात थी । उनके परिवर्तन का एक स्पष्ट चिन्ह् यह था कि उन्होंने अपनी मूर्तियों को फेंक दिया और सच्चे परमेश्वर की ओर मुड़ गए । ऐसा हमारे साथ भी होना चाहिए ।

"जीवित और सच्चे परमेश्वर" पौलुस इस परमेश्वर और ***"ईश्वरों"*** में अन्तर करने के लिए इन शब्दों का उपयोग करता है । वे मूर्तियाँ जिन्हें थिस्सलुनीके के विश्वासी पहले पूजते थे और बहुत से लोग उस समय भी उनकी पूजा कर रहे थे । १ कुरू ८:५,६; भजन ११५:३-८; यशा : ४४:२०; यिर्म १०:१४; रोमि १:२२, २३, २५ । यदि हम चाहते हैं कि सत्य और जीवित परमेश्वर हमारे परमेश्वर हों, तो जैसे थिस्सुलनीकियों ने किया हमें भी करना चाहिए । एक ही समय में हम सच्चे परमेश्वर और मूर्तियों को नहीं मान सकते ।

१:१०- ***"प्रतीक्षा करना"*** - १ कुरू १:७; तीतुस २:१३; इब्रा ९:२८। थिस्सलुनीकियों को लिखे दोनों पत्रों में मसीह का दोबारा आना एक महत्वपूर्ण विषय है - यह नए नियम का आवश्यक विषय है - २:१९; ३:१३; ४:१३-१८; २ थिस्स १:७;२:१; मत्ती २४:३०; यूहन्ना १४:३; प्रेरित १:११; प्रका १:७ ।

"मरे हुओं में से जिलाया" - मत्ती २८:६; प्रेरित १:३; २:२४-३२; १ कुरि १५:३-८ ।

"आनेवाले क्रोध" रोमि १:१८; २:५; इपि ५:६; कुलु ३:६; प्रका ६:१६ । परमेश्वर के क्रोध पर नोट्स गिनती २५:३; भजन ९०:७-११; यूहन्ना ३:३६; रोमि १:१८ । जब परमेश्वर संसार का न्याय करने आएंगे तब उनका क्रोध प्रगट होगा । क्रोध, उध्दार का उल्टा है - ५:९ । इसका अर्थ है अनन्तकालिक दण्ड- २ थिस्स १:७-१०; मत्ती २५:४६ । यीशु ही हैं जो विश्वासियों को इस क्रोध से बचाते हैं । रोमि ५:९ देखें । कुछ वचन के ज्ञाताओं ने वचन के इस भाग के विषय में अपने विचार प्रगट किए हैं । वह यह कि जिस क्रोध के विषय वह कहता है, वह इस युग के अन्त में होनेवाला पीड़ा का समय हैं (मत्ती २४:२१) । बाईबल में महान संकट काल को परमेश्वर का क्रोध नहीं कहा गया है । वास्तव में यह परमेश्वर के विरोध में शैतान और बुरे मनुष्यों का क्रोध है । मत्ती २४:२९; प्रका. ६:१२-१७; १३:७, १५-१७ । यहाँ या कहीं और पौलुस यह नहीं कहता है कि विश्वासी इससे छुड़ा लिए जाएंगे । हमें यह भी समझना चाहिए कि चाहे कलीसिया महासंकट काल के समय में होकर जाए या नहीं, किसी न किसी प्रकार के सच्चे विश्वासी उस समय संकट काल में रहेंगे ही । प्रका. १२:१७; १३:७ देखें । यदि संकट काल परमेश्वर का क्रोध है, तो इसका अर्थ यह हुआ परमेश्वर का क्रोध उन सन्तों पर आएगा, जो मृत्यु तक ख्रीष्ट विरोधी का सामना करेंगे । क्या हम इसकी संभावना की कल्पना कर सकते हैं ? निश्चित रीति से ''परमेश्वर का क्रोध'' एक ऐसे अनुभव (समय) की ओर संकेत करता है जो महासंकट काल से अधिक भयानक है ।

अध्याय २

२:१ ***"आना व्यर्थ"*** - १:५-१० इस बात को स्पष्ट कर देता है ।

२:२ ***"फिलिप्पी"*** प्रेरित १६:१९-२४

"संघर्ष" प्रेरित १७:५-१०

२:३ यह संभव है कि थिस्सुलनीके में कोई व्यक्ति पौलुस का विरोध कर रहा था । २ कुरू १:१२; २:१७;४:२ ।

२:४ ***"सुसमाचार सौंपा"*** - १ कुरू ४:१; गल २:७; इफि ३:७,८; १ तिम १:११,१२ ।

"मनुष्यों को नहीं" - गल १:१० ।

"मनों को जाँचते हैं" - १ शमू १६:७; भजन ६६:१०; १३९:१,२३,२४; नीति २१:२; यिर्म १७:१०; प्रका. २:२३ ।

२:५ प्रेरित २०:३३-३५; २ कुरि ७:२ कुछ प्रचारक धन के पीछे है और लोगों से प्राप्त करने के लिए एक दीनता और नम्रता का मुखौटा चढ़ाए रहते हैं - १ तिमो ६:५ । पौलुस उनके समान नहीं था । वह यह जानता था कि लोभी और धोखेबाज के ऊपर परमेश्वर का क्रोध बना रहता है - इफि ५:५,६; कुलु ३:५,६; १ तिमो ६:९,११ ।

"और परमेश्वर भी" - पद १० यह एक जोरदार तरीके से गंभीर बात को कहना है ।

२:६ ***"मनुष्यों से"*** यूहन्ना ५:४४, रोमि २:२९

"बोझ" १ कुरि ९:७-१५; २ कुरि ११:९ ।

२:७ पद ११; गल ४:१९ ।

२:८ २ कुरि ७:३; १२:१५, १ यूह ३:१६ ।

१० परिश्रम करते हुए तुम में परमेश्वर का शुभसंदेश दिया, कि तुम में से किसी पर भार न हो। **तुम** आप ही गवाह हो : और
११ परमेश्वर भी, कि तुम्हारे बीच में जो विश्वास रखते हो हम कैसी पवित्रता और धार्मिकता और निर्दोषता से रहे। **तुम**
जानते हो, कि जैसा पिता अपने बच्चो के साथ बर्ताव करता है, वैसे ही हम तुम में से हर एक को भी उपदेश करते,
१२ और शान्ति देते, और समझाते थे। **कि** तुम्हारा चाल-चलन परमेश्वर के योग्य हो, जो तुम्हें अपने राज्य और महिमा में बुलाते
१३ हैं। **इसलिये** हम भी परमेश्वर का धन्यवाद निरन्तर करते हैं; कि जब हमारे द्वारा परमेश्वर के सुसमाचार का वचन तुम्हारे
पास पहुंचा, तो तुम ने उसे मनुष्यों का नहीं, परन्तु परमेश्वर का वचन समझकर (और सचमुच यह ऐसा ही है) स्वीकार
१४ किया। वह वचन तुम में, जो विश्वास रखते हो, प्रभावशाली है। **हे भाइयो** तुम, परमेश्वर की उन कलीसियाओं के समान
जीवन जीने लगे, जो यहूदिया में मसीह यीशु में हैं, क्योंकि तुम ने भी अपने लोगों से वैसा ही दुःख पाया, जैसा उन्हों ने यहूदियों
१५ से पाया था, **जिन्हों** ने प्रभु यीशु को और भविष्यद्वाक्ताओं को भी मार डाला ओर हम को भी सताया। परमेश्वर उन से
१६ प्रसन्न नहीं, और वे सब मनुष्यों का विरोध करते हैं। **क्योंकि** वे गैर यहूदियों से बातें करने से हमें रोकते हैं, कि सदा अपने
१७ पापों का पैमाना भरते रहें, किन्तु उन पर भयानक प्रकोप आ पहुंचा है। **हे भाइयो,** हम थोड़ी देर के लिये मन में नहीं
वरन् प्रगट में तुम से अलग हो गए थे, इसलिए हम ने बड़ी लालसा के साथ तुम्हारा मुंह देखने के लिये और भी अधिक कोशिश
१८ की। **इसलिये** हम ने (अर्थात् मुझ पौलुस ने) एक बार नहीं, वरन् दो बार तुम्हारे पास आना चाहा, परन्तु पिशाच हमें रोके
१६ रहा। भला हमारी आशा या आनन्द या उल्लास का मुकुट क्या है ? क्या हमारे प्रभु यीशु के सम्मुख उसके आने के समय
२० तुम ही न होगे ? हमारी महिमा और आनन्द तुम ही हो।
३,२ **इसलिये** जब हम से और न रहा गया, तो हम ने यह सोचा कि एथेन्स में अकेले रह जाएं; **और** हम ने तीमुथियुस को जो
मसीह के सुसमाचार में हमारा भाई, और परमेश्वर का सेवक है, इसलिये भेजा, कि वह तुम्हें स्थिर करे; और तुम्हारे विश्वास

२:६ प्रेरित १८:३; २ कुरि११:६; २ थिस्स ३:८।

२:१० वह यह अपने लिए, इस तरह की बातें नहीं कर रहा है। वह उनके और सुसमाचार के लिए यह कह रहा है। २ कुरि १:१२; ११:१६-२१; १२:१६ सुसमाचार की सत्यता के विषय में वह नहीं चाहता था, कि उन्हें कुछ सन्देह हो।

२:११,१२ उनके लिए वह एक माँ और पिता के समान था - पद ७। १ कुरि ४:१५; और गल. ४:१६ से तुलना करें। शुभसंदेश देने वाले और पास्टरों का व्यवहार विश्वासियों के साथ कैसा होना चाहिए, इसमें वह आदर्श था।

"चाल-चलन" इफि २:१० के नोट्स देखें।

"परमेश्वर के योग्य" - इफि ४:१; फिलि १:२७; कुलु १:१० देखें।

"बुलाते है" - रोमि १:६; ८:३०।

"राज्य और महिमा" -मत्ती ४:१७; २५:३४; यूहन्ना १७:२२,२४; रोमि ५:२; ८:१७; १४:१७; कुलु १:१२,१३; इब्रा. १२:२८; २ पत १:११।

२:१३ ***"परमेश्वर के सुसमाचार"*** - इसका यहाँ अर्थ है मसीह का शुभसंदेश। गल १:११,१२ देखें और २ तिमो ३:१६ से तुलना करें।

"प्रभावशाली है" - फिलि १:६; २:१३ से तुलना करे। भलाई के लिए, परमेश्वर का वचन लोगों के मन और हृदय में कार्य करनेवाला बल है - भजन ११६:११; इब्रा ४:१२। इसलिए हम परमेश्वर की ओर से कुलु ३:१६ में निर्देष मिला है।

२:१४ ***"जीवन जीने लगे"*** - १:६।

"तुमने भी अपने लोगों से" - यूनानी। विश्वास न करनेवाले यूनानी लोगों ने विश्वास करनेवाले यूनानियों को सताया जैसे अविश्वासी यहूदियों ने विश्वासी यहूदियों को सताया था। इसी प्रकार से इस पृथ्वी पर लोग मसीह के लोगों को सताते हैं।

२:१५ - ***"मार डाला"*** - यहूदियों ने यीशु को रोमी लोगों के सुपुर्द कर दिया था और उसकी मृत्यु की मांग की थी। रोमी सिपाहियों ने वास्तव में उसे मारा था। यहूदी उसकी मौत के ज़िम्मेदार थे (मत्ती २७:१,२, २२,२५; प्रेरित २:२३; ३:१३-१५)।

"भविष्यद्वक्ताओं" मत्ती २३:३७; प्रेरित ७:५२।

"हम को सताया" - प्रेरित १३:४५,५०; १४:२,५,१६; १७:७ इ.।

२:१६ ***"गैरयहूदी"*** - प्रेरित १३:४५,५०; २०:३; २१:२७;२२:२१,२२:२१,२२।

२:१७,१८ ***"अलग हो गए"*** - प्रेरित १७:१० केवल थोड़े समय के लिए वह थिस्सुलुनीके में था। इससे पहले कि उन्हें सिखाने का उसे अवसर मिले, उसे उन विश्वासियों को छोड़ना पड़ा था। वह उनसे बहुत प्रेम करता था (पद ७,११) और उनसे भेंट करना चाहता था।

"शैतान हमें रोके रहे" - रोमि १:१३ से तुलना करें। हमें यह नहीं मालूम कि पौलुस किन परिस्थितियों की ओर संकेत करता है। हमें यह मालूम है कि शैतान निरन्तर परमेश्वर के सेवकों का विरोध करता है। ऐसा भी लगता है कि वह योजना को बिगाड़ने और देरी करने का कार्य भी कर सकता है। शैतान के विषय में १ इति २१:१, मत्ती ४:१-१० और यूहन्ना ८:४४ के नोट्स देखें।

२:१६,२० फिलि ४:१ देखें। जिन्होंने मसीह पर विश्वास किया उनके बारे में वह गर्व कर रहा था। इससे उसे कितना आनन्द मिलता होगा।

"मुकुट" - वह आत्माओं के जीतने के प्रतिफल की बात करता है। यह प्रयासों के द्वारा मसीह की उपस्थिति को देखना है। भजन १२६:१; ५:६; यूहन्ना ४:३६।

अध्याय ३

३:१ ***"एथेन्स"*** पौलुस और उसके साथी थिस्सलुनीके से बीरिया और वहाँ से एथेन्स गए (प्रेरित१७:१०,१५)

३:२ ***"तिमोथी"*** १:१; प्रेरित १६:१।

"स्थिर करें" वह सदा इस बात के लिए चिन्तित था, कि विशेषकर नए विश्वासी अपने विश्वास में मजबूत हों और मसीह के लिए

३ के विषय में तुम्हें समझाए, **कि कोई** इन क्लेशों के कारण डगमगा न जाए; क्योंकि तुम आप जानते हो, कि हम इन के लिये
४, ठहराए गए हैं । **क्योंकि** पहिले भी, जब हम तुम्हारे यहां थे, तो तुम से कहा करते थे, कि हमें क्लेश उठाने पड़ेंगे, और ऐसा
५ ही हुआ है, और तुम जानते भी हो । **इस** कारण जब मुझ से और न रहा गया, तो तुम्हारे विश्वास का हाल जानने के
लिये भेजा, कि कहीं ऐसा न हो, कि परीक्षा करनेवाले ने तुम्हारी परीक्षा की हो, और हमारा परिश्रम व्यर्थ हो गया हो ।
६ लेकिन **अभी** तीमुथियुस ने जो तुम्हारे पास से हमारे यहां आकर तुम्हारे विश्वास और प्रेम का सुसमाचार सुनाया और
इस बात को भी सुनाया, कि तुम सदा प्रेम के साथ हमें स्मरण करते हो और हमे देखने की इच्छा रखते हो, जैसा हम
७ भी तुम्हें देखने की । **इसलिये** हे भाइयो, हम ने अपने सारे कष्टों और क्लेश में तुम्हारे विश्वास से तुम्हारे विषय में शान्ति पाई ।
८,९ **अब** यदि तुम प्रभु में स्थिर रहो तो हम जीवित हैं । **जैसा** आनन्द हमें तुम्हारे कारण अपने परमेश्वर के साम्हने है, उसके
१० बदले तुम्हारे विषय में हम कैसे परमेश्वर का धन्यवाद करें ? **हम** रात दिन बहुत ही प्रार्थना करते रहते हैं, कि तुम्हारा
११ मुंह देखें, और तुम्हारे विश्वास की कमी पूरी करें । **अब** हमारे परमेश्वर और प्रभु यीशु, तुम्हारे यहां आने के
१२ लिये हमारी अगुआई करें; **और** प्रभु ऐसा करें, कि जैसा हम तुम से प्रेम रखते हैं वैसा ही तुम्हारा प्रेम भी आपस में, और
१३ सब मनुष्यों के साथ बढ़े और उन्नति करता जाए । **जब** हमारे प्रभु यीशु अपने सब पवित्र लोगों के साथ
आएं, तो वह तुम्हारे दिलों को हमारे पिता परमेश्वर के सामने पवित्रता में निर्दोष ठहराएं ।

जीने के लिए प्रोत्साहित किए जाएं । पद १३; २:१२; २ थिस्स २:१७; प्रेरित १४:२२; २ कुरि १२:१९; इफि ३:१६; कुलु १:११, २:७ ।

३:३ ***"इन क्लेशों"*** - २:१४

"इम इन्ही के लिए ठहराए गए हैं" - इस सत्य पर सावधानी से ध्यान दें और यूहन्ना १६:३३; प्रेरित १४:२२; १ पत ४:१,१२ से तुलना करें ।

३:४ अपने अनुभव और परमेश्वर के वचन के आधार पर उसने सिखाया, कि क्या होगा । सुसमाचार की आशीषों के विषय बताते समय उसने विश्वासी पर आनेवाली समस्याओं के बारे में उन्हें अनजान नहीं रखा । प्रेरित २०:२०,२७ से तुलना करें ।

३:५ ***"और न रहा गया"*** - १ कुरू १५:२; गल ४:११ से तुलना करें । मसीह में सच्चा विश्वास विश्वासियों की सहायता करता है कि वे परीक्षाओं, परखे जाने और सताए जाने पर जयवन्त हों - यूहन्ना १०:३९; १ यूहन्ना ५:४-५ आदि) पौलुस जानता था कि थिस्सुलुनीके के लोग काफी समस्याएँ सह रहे थे । क्या परखे जाने के समय उनका विश्वास वास्तविक ठहरेगा ? वह यह जानना चाहता था ।

"परीक्षा करनेवाले" - शैतान (मत्ती ४:१-१०)

"व्यर्थ" - गल २:२; फिलि २:१६

३:६ ***"विश्वास और प्रेम"*** - १:३ ।

३:७ ***"विश्वास से तुम्हारे विषय में शान्ति पाई"*** - वह यह समझ गया था कि वे अपने विश्वास की परीक्षा में सफल हो गए और इसलिए सिध्द कर दिया कि वह सच्चा विश्वास था (१ पत १:६,७) ।

३:८ ***"हम जीवित हैं"*** पौलुस यह महसूस करता था कि उसका जीवन उनसे बंधा हुआ है । यदि वे मसीह में उसके साथ विश्वासयोग्यता से जीवित थे तो वह जीवित था । १ कुरू १२:२४-२६ से तुलना करें ।

"स्थिर रहो" १ कुरू १५:५८; गल ५:१; इफि ६:१४; कुलु २:५; याकूब ५:८; १ पत ५:६,१०; इफि ३:८

३:९ ***"धन्यवाद"*** १:२ उसकी सेवकाई के द्वारा ये थिस्सुलीनीके के विश्वासी शिष्य बन गए थे । वह परमेश्वर के प्रति कृतज्ञ था क्योंकि उसे मालूम था कि परमेश्वर के द्वारा ही यह संभव है ।

"आनन्द" -२:१९,२० इसलिए कि उन्होंने अपने आप को मसीह में बलवन्त और खरे विश्वासी होकर दिखाया, यह आनन्द उसे मिला । यह एक ऐसे पिता के आनन्द के समान है जो अपने बच्चों को सफल होता देखकर आनन्दित होता है । यह किसी और प्रकार के आनन्द से बढ़कर था क्योंकि यह परमेश्वर की संगति में आत्मिकआनन्द था ।

३:१० ***"प्रार्थना करते रहते है"*** १:२,३ ।

"तुम्हारे विश्वास की घटी पूरी करें" - उन्होंने मसीह पर विश्वास किया था और सताव के बावजूद स्थिर रहे । पौलुस यह नहीं दिखाता कि उनका विश्वास परिपक्व और सिध्द था । उन्हें विश्वास में उन्नति करने की आवश्यकता थी - लूका १७:५; २ कुरू १०:१५; २ थिस्स १:३ । इसके लिए उन्हें परमेश्वर के वचन से और सीखना था - रोमि १०:१७, इफि ४:१२-१५ । पौलुस उनसे भेंट करना और यह शिक्षा देना चाहता था ।

३:११ ***"तुम्हारे यहां आने के लिए हमारी अगुवाई करें"*** - २:१८ । व तुलना करें ।

३:१२ ***"तुम्हारा ..... उन्नति करता जाए"*** - ४:९, १०; २ थिस्स १:३, यूहन्ना १३:३४; रोमि १२:९,१०; १ कुरू १३:१,१३; रोमि १२:९,१०; १ कुरू १३:१,१३; १ यूहन्ना २:५,१०; ३:११,१४,१६-१८ ।

३:१३ ***"मनों को ऐसा स्थिर करे"*** विश्वासी की एक बड़ी आवश्यकता आत्मिक बल है । पौलुस ने यह प्रार्थना परमेश्वर की इच्छा में की, कि वे इसे प्राप्त करें । देखे इफि ३:१६

"पवित्रता में निर्दोष" - ५:२३; १ कुरू १:८; इफि ५:२६,२७; फिलि २:१५; तीतुस २:१४; २ पत ३:१४ ।

"पवित्र लोगों" का अर्थ स्वर्गदूत या विश्वासी या दोनों ही हो सकते है (४:१४; मत्ती २५:३१; यहूदा १४, प्रका १९:१४)

४ **अन्त में**, हे भाइयो, हम तुम से बिनती करते हैं, और तुम्हें प्रभु यीशु में समझाते हैं, कि जैसे तुम ने हम से खरा जीवन जीना,
२ और परमेश्वर को प्रसन्न करना सीखा है, और जैसा तुम्हारा जीवन है, वैसे ही और भी बढ़ते जाओ । **क्योंकि** तुम जानते
३ हो, कि हम ने प्रभु यीशु की ओर से तुम्हें कौन कौन सी आज्ञा पहुंचाई । **क्योंकि** परमेश्वर की इच्छा यह है, कि तुम पवित्र
४ बनो अर्थात् व्यभिचार से बचे रहो । **कि तुम** में से हर एक पवित्रता और आदर के साथ अपने जीवन साथी को प्राप्त करना
५,६ जाने । **और** यह काम अभिलाषा से नहीं, और न उन लागों की तरह, जो परमेश्वर को नहीं जानते, कि इस बात में कोई
अपने भाई को न ठगे, और न उसका अपराध करे, क्योंकि प्रभु इन सब बातों का बदला लेनेवाले हैं; जैसा कि हम ने पहिले
७ तुम से कहा, और चिताया भी था । **क्योंकि** परमेश्वर ने हमें अशुध्द होने के लिये नहीं, परंतु पवित्र होने के लिये बुलाया है ।
८ **इस कारण** जो इसे तुच्छ जानता है, वह मनुष्य को नहीं, परन्तु परमेश्वर को तुच्छ जानता है, जो अपना पवित्र आत्मा तुम्हें
९ देते हैं । **किन्तु** भाईचारे की प्रीति के विषय में यह अवश्य नहीं, कि मैं तुम्हारे पास कुछ लिखूं; क्योंकि आपस में प्रेम रखना
१० तुम ने आप ही परमेश्वर से सीखा है । **क्योंकि तुम** सारे मकिदुनिया के सब भाई बहनों के साथ ऐसा करते भी हो, पर हे भाई
११ बहनों, हम तुम्हें समझाते हैं, कि और भी बढ़ते जाओ, **और** जैसी हम ने तुम्हें आज्ञा दी, वैसे ही चुपचाप रहने और अपना
१२ अपना काम काज करने, और अपने अपने हाथों से कमाने का प्रयत्न करो, **कि बाहरवालों** के साथ सभ्यता से बर्ताव करो,
१३ और तुम्हे किसी वस्तु की कमी न हो । **हे भाइयो**, हम नहीं चाहते, कि तुम उनके विषय में जो सोते हैं, अज्ञानी रहो । और उन

अध्याय ४

४:१ ***"परमेश्वर को प्रसन्न करना"*** रोमि १४:१८; २ कुरू ५:९; इफि ५:१०; कुलु १:१० । किसी और तरीके का जीवन किसी विश्वासी को नहीं जीना चाहिए । हमारा पूरा उत्तरदायित्व यह है कि परमेश्वर को प्रसन्न करें । प्रत्येक बात में हमें अपने आप से यह पूछना चाहिए ***"क्या यह सचमुच में परमेश्वर को प्रसन्न करता है ?"*** तब हम दाऊद के समान, जो परमेश्वर के मन के अनुसार था, बन सकते हैं - १ शमू १३:१४ में नोट्स देखें ।

४:२ ***"प्रभु यीशु में"*** - उसे मालूम था कि वह मसीह का राजदूत है (२कुरू ५:२०) । शुभसंदेश और वह शिक्षा जो वह कलीसियाओं में दे रहा था, यीशु ही ने उसे दीं थी - २:१३; गल १:११,१२ । इसलिए स्वर्ग के अधिकार के साथ वह बोल सकता था ।

४:३- ***"तुम पवित्र बनो"*** - ३:१३; ५:२३; यूहन्ना १७:१७-१९; रोमि ६:१९; २ कुरू ७:१; इब्रा १२:१४; १ पत १५,१६ ।

"अनैतिकता" - १ कुरू ६:१८-२०; गल ५:१९; इफि ५:३; कुल ३:५

४:४,५ ***"जीवन साथी"*** किसी भी व्यक्ति का शरीर, उसकी आत्मा का पात्र है और आत्मा को उसको गुलाम नहीं बनना है, किन्तु आत्मा का उस पर नियंत्रण होना चाहिए ।

"आदर में" अनैतिकता अनादर और शर्म लाती है ।

"उन गैर यहूदियों के समान अनैतिक जीवन जो यीशु को नहीं जानते" - इफि ४:१७-२० ।

४:६ व्यभिचार एक ऐसा अपराध है जो करने वाले के साथ ही नहीं किन्तु वैवाहिक साथी के साथ है ।

"प्रभु सब बातों का पलटा लेने वाले हैं" रोमि १२:१९ वह निश्चित समय पर दण्ड लाएगा - इफि ५:५,६; कुलु ३:६; इब्रा १३:४ । विश्वासियों को बदला लेने का अवसर नहीं, ढूंढना चाहिए और न ही ऐसा करना चाहिए ।

४:७ ***"पवित्र होने के लिए बुलाए गए"*** - रोमि १:७; १ कुरि १:२; तीतुस २:१४; इब्रा ३:१; १२:१४; १ पत १:१५ ।

४:८ ***"मनुष्य को नहीं किन्तु परमेश्वर को तुच्छ जानता"*** पौलुस की शिक्षा "प्रभु यीशु मसीह के द्वारा थी (पद २) । इसलिए उसकी शिक्षा के तज देने का अर्थ था उस परमेश्वर को तुच्छ जानना जिसने उसे भेजा था ।

"पवित्र आत्मा" : १ कुरि ६:१९; गल ४:६, इफि १:१३; यूहन्ना १४:१६,१७ ।

४:९ ***"भाईचारे की प्रीति"*** वह प्रेम है जो एक दूसरे के लिए है । एक आत्मिक पिता के वे आत्मिक भाई और बहन हैं । इस सत्य के आधार पर उनको व्यवहार करना चाहिए - यूहन्ना १३:३४ आदि

"परमेश्वर से सीखा है" यशा ५४:१३; यूहन्ना ६:४५; १ यूहन्ना २:२७ से तुलना करे । भजन २५:४,५ देखें ।

४:१० ***"मकिदुनिया"*** प्रेरित १६:९ उस राज्य में थिस्सलुनीके था ।

"और भी बढ़ते जाओ" -३:१२; ४:१ जब तक इफि ४:१२-१५ एक वास्तविकता न बन जाए मसीही जीवन निरन्तर बढ़ने वाला जीवन होना चाहिए ।

४:११- ***"प्रयत्न"*** लोगों की बहुत आकांक्षाए होती है, कुछ स्वार्थमय (गल ५:२०; फिलि १:१७; याकूब ३:१४) । पौलुस हमें एक लक्ष्य दिखाता है, जो सही है । परमेश्वर ने हममें से प्रत्येक को वहां रखा है जहाँ वह चाहते हैं और एक कार्य करने के लिए दिया है । हम शान्ति से इस कार्य में लग जाएं और दूसरों के कार्यो में हाथ न डालें ।

"अपने अपने हाथों से कमाने" - जैसा आज भी कुछ लोग सोचते हैं, उस समय भी सोचते थे कि शारीरिक श्रम का कार्य छोटा है । महान प्रेरित ऐसा नहीं सोचता था (२:९; प्रेरित १८:३; २०:३४, ३५) । वह यह भी नहीं चाहता था कि दूसरे ऐसा सोचें ।

४:१२ ***"घटी न हो"*** आलस्यपन और दूसरों के कामों में हाथ डालने से कुछ लाभ नहीं होने का नीति २४:२९-३४

४:१३-१८ यीशु मसीह के द्वितीय आगमन से सम्बधित भविष्यद्वाणियाँ मत्ती २४:२७-३१, ३६; यूहन्ना १४:३; प्रेरित १:११; १ कुरि १५:२३ (५१-५४); २ थिस्स १:७; २:१,८; इब्रा ९:२८; १ यूहन्ना २:२८; प्रका १:७; १९:११-१६; २२:१२ ।

१४ लोगों के समान शोक करो जिन्हें आशा नहीं । **क्योंकि** यदि हम विश्वास करते हैं, कि यीशु मरे, और जी भी उठे,
१५ तो वैसे ही परमेश्वर उन्हें भी जो यीशु में सो गए हैं, उन्हीं के साथ ले आएंगे । **हम** प्रभु के वचन के अनुसार तुम से यह
१६ कहते हैं, कि हम जो जीवित हैं, और प्रभु के आने तक बचे रहेंगे तो सोए हुओं से कभी आगे न बढ़ेंगे । **क्योंकि** प्रभु आप
१७ ही स्वर्ग से उतरेंगे; उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी, और
१७ जो मसीह में मरे हैं, वे पहिले जी उठेंगे । **तब** हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उन के साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे,
१८ कि हवा में प्रभु से मिलें, और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे । **इन** बातों से एक दूसरे को शान्ति दिया करो ।
५,२ **हे भाइयो**, इसकी आवश्यकता नहीं, कि समयों और कालों के विषय में तुम्हारे पास कुछ लिखा जाए । **क्योंकि** तुम आप ठीक
३ जानते हो कि जैसे रात को चोर आता है, वैसे ही प्रभु का दिन आनेवाला है । **जब** लोग कहते होंगे, कि कुशल है, और कुछ
भय नहीं, तब उन पर अचानक विनाश आ पड़ेगा जैसे गर्भवती स्त्री पर अचानक प्रसव की पीड़ा आती है, वैसे ही उन पर भी

४:१३ ***"जो सोते हैं"*** यह भाव प्रायः बाईबिल में मृत्यु की ओर संकेत के लिए है । यूहन्ना ११:११,१४; प्रेरित ७:६० ।

"सोना" दिखाता है कि नींद से जगने का एक समय या पुनरूत्थान आनेवाला है । इस "सोने" में शरीर ही सोता है, आत्मा नहीं । देखें प्रका ६:९-११ ।

"ऐसा न हो, कि तुम दूसरों की तरह शोक करो" - विश्वासी जान सकते हैं कि मृत्यु अन्त नहीं है । पुनरूत्थान है और पहले से जो पहले जा चुके हैं उनके साथ मिलन भी ।

"आशा नहीं" मसीह के बिना भविष्य के विषय में कोई आशा नहीं (इफि. २:१२)

४:१४ ***"सो गए हैं, उसी के साथ ले आएगा"*** मत्ती २७:५०, २८:६; प्रेरित १:३; रोमि १:४, १ कुरि १५:३-८ ।

"वैसे ही" - परमेश्वर ने जो प्रगट किया है, उनके द्वारा प्रगट की दूसरी बातों पर विश्वास करने के लिए भी हमें योग्य बनना चाहिए ।

"यीशु में सो गए है" आने पर यीशु उन विश्वासियों की आत्मा को ले आएंगे जो मर चुके हैं ।

४:१५ ***"प्रभु के वचन"*** - यह संभव है कि यीशु ने उस रहस्य को प्रगट किया था वह यह कि मसीह में मरे पहले जी उठेंगे - जिस प्रकार से दूसरी सच्चाईयों को उन्होंने प्रगट किया था यह पौलुस को सीधे बताया । गल १:११,१२ । हालाँकि किसी सुसमाचार में यह बात दिखती नहीं है, यह संभव है कि अपने पृथ्वी के समय में यीशु ने अपने प्रेरितों पर यह प्रगट किया ।

"हम जो जीवित हैं" - मसीह के वापस आने पर कुछ जीवित होंगे । ***"हम"*** शब्द का अर्थ यह नहीं कि पौलुस अपने आपको भी उसमें देखता है । वह सामान्य रीति से यह कह रहा है । - मसीह के द्वितीय आगमन पर कुछ विश्वासी मर चुकेंगे, कुछ जीवित रहेंगे । जैसे हमें नहीं मालूम, पौलुस भी मसीह के आने के बारे में नहीं जानता था - ५:१,२; मत्ती २४:३६ - इसलिए वह यह सोच भी नहीं सकता था, कि वह जीवित नहीं रहेगा (२ तिमो ४:६,७) । यहाँ वह ऐसा कोई संकेत नहीं देता, कि यीशु का आना महासंकट से पहले होगा (मत्ती २४:२१) या बाद में ।

"आगे न बढ़ेंगे" - जो अभी भी जीवित हैं ।

४:१६ ***"स्वर्ग से"*** - प्रेरित १:११; ३:२१; प्रका १९:११ ।

"ललकार" - इस यूनानी शब्द का अर्थ है ***"बुलाया जाना"*** या ***"ज़ोर से आज्ञा देना"*** । विश्वासी चाहे कब्रों में हों या कहीं और, यीशु उन्हें बुलाएंगे - देखें यूहन्ना ५:२८; यूहन्ना ११:४३,४४ से तुलना करें ।

"प्रधान स्वर्गदूत" - मीकाईल (यहूदा ९; दानिय्येल १०:१३)। केवल मीकाईल ही नहीं किन्तु दूसरे अन्य स्वर्गदूत मसीह के साथ आएंगे - मत्ती १६:२७; २५:३१ ।

"तुरही" - १ कुरि १५:५२; मत्ती २४:३१ देखें ।

"जो मसीह में मरे हैं" उसी समय अविश्वासियों के जी उठने के बारे में पौलुस कुछ नहीं कहता है । प्रका. २०:४-६ फिलि ३:११ से तुलना करे ।

४:१७ ***"बादलों पर उठा लिए जाएंगे"*** - उस क्षण क्या होगा यह बात पौलुस १ कुरि १५:५२,५३ में बताता है । फिलि ३:२०,२१ भी देखें । १ यूहन्ना ३:२ । प्रायः विश्वासी ***"रैप्चर"*** (जो एक लैटिन शब्द है; जिसका अर्थ है ***"ले जाया जाना"***, की बात करते हैं ।)

"बादलों" - दानि ७:१३; मत्ती २४:३०; २६:६४; प्रका. १:७ ***"हवा में प्रभु से मिलें"*** मत्ती २४:३१ से तुलना करें । यहाँ पौलुस यह नहीं बताता कि इसके बाद क्या होगा - वह तुरन्त अपने लोगों के साथ वापस आएंगे या नहीं ।

"सदा प्रभु के साथ" - यह एक अद्‌भुत लक्ष्य है, जिसकी ओर प्रत्येक विश्वासी चला जा रहा है । ५:१०, यूहन्ना १४:३; कुल ३:४; प्रका २१:३; आदि)

४:१८ ***"शान्ति"*** या ***"प्रोत्साहन"*** - यूनानी भाषा के शब्द में दोनों अर्थ लगाए जाते हैं । परमेश्वर के लोगों के प्रत्येक दुख में जो उन पर आ सकता है ये शब्द बड़ी शान्ति और प्रोत्साहन देते हैं । ये दुख अनेक प्रकार की निराशा परखा जाना, सताव और दुख हैं ।

अध्याय ५

५:१ ***"समयों और कालों"*** मत्ती २४:३६; प्रेरित १:६,७ ।

५:२ ***"प्रभु का दिन"*** - प्रेरित २:२०; १ कुरि ५:५; २ थिस्स २:२; २ पत ३:१० । ये शब्द पुराने नियम से लिए गए हैं । यशा १३:६,९ (२:१२-१८) योएल १:१५; २:३१ । महासंकट काल जो प्रभु के दिन से पहले आएगा, इससे भिन्न है । मत्ती २४:२९ और प्रका ६:१२-१७ देखें और तुलना करें । ४:१३-१८ में पौलुस ने पुनरूत्थान और उठाए जाने के विषय में लिखा है । यहाँ वह इस बात का संकेत देता है कि जब वह उन्हें उस घटना के बारे में लिख रहा था, तो ***'प्रभु के दिन'*** की बात कर रहा था । ऐसा लगता है कि वह यह सिखा रहा था, कि विश्वासियों के लिए मसीह का लौटना उस समय के प्रारम्भ में होता है जिसे प्रभु का दिन कहा गया है ।

"रात को चोर" मत्ती २४:४३, ४४; लूका १२:३९,४० । प्रका. ३:३; १६:१५ ।

५:३ ***"शान्ति"*** - यिर्म ६:१४; यहे १३:१० से तुलना करें ।

४ विनाश आ पड़ेगा । और वे किसी रीति से न बचेंगे ।परन्तु **हे भाइयो**, तुम तो अज्ञानता और बुराई में नहीं हो, कि वह दिन
५ तुम पर चोर की तरह आ पड़े । **क्योंकि** तुम सब ज्योति की सन्तान, और दिन की सन्तान हो; हम न रात के हैं, न अन्धकार
६,७ के हैं । **इसलिये** हम औरों के समान सोते न रहें, पर जागते और सावधान रहें । **क्योंकि** जो सोते हैं, वे रात ही को सोते हैं
८, और जो मतवाले होते हैं, वे रात ही को मतवाले होते हैं । **परन्तु** हम जो दिन के हैं, विश्वास और प्रेम की झिलम पहिनकर और
९ मुक्ति की आशा का टोप पहिनकर सावधान रहें, **क्योंकि** परमेश्वर ने हमें दण्ड के लिये नहीं, परन्तु इसलिये ठहराया, कि हम अपने
१० प्रभु यीशु मसीह के द्वारा मुक्ति प्राप्त करें । **वह** हमारे लिये इस कारण मरे, कि हम चाहे जागते हों, चाहे सोते हों, सब मिलकर
११ उन्हीं के साथ जीएं । **इस कारण** एक दूसरे को शान्ति दो, और एक दूसरे की उन्नति के कारण बनो, जैसा कि तुम करते भी हो ।
१२, **हे भाइयो**, हम तुम से बिनती करते हैं, कि जो तुम में परिश्रम करते हैं, और प्रभु में तुम्हारे अगुवे हैं, और तुम्हें शिक्षा देते हैं,
१३ उन्हें मानो । **उन** के काम के कारण प्रेम के साथ उन को बहुत ही आदर के योग्य समझोः आपस में मेल-मिलाप से रहो ।
१४ **हे भाइयो**, हम तुम्हें समझाते हैं, कि जो ठीक चाल नहीं चलते, उन को समझाओ, डरनेवालों को हिम्मत दो, कमजोरों को संभालो,
१५ सब की ओर सहनशीलता दिखाओ । **सावधान !** कोई किसी से बुराई के बदले बुराई न करे; पर सदा 'भलाई करने पर तत्पर
१६,१७, रहो, आपस में और सब से भी भलाई ही की कोशिश करो । **सदा** आनन्दित रहो । **निरन्तर** प्रार्थना में लगे रहो ।

''एकाएक'' नीति ६:१५; २९:१, यशा २९:५,६ से तुलना करे ।

''विनाश'' - फिलि ३:१९; २ पत ३:७; २ थिस्स १:८,९ प्रगट करता है, कि इस विनाश का अर्थ क्या है - प्रभु की उपस्थिति से सदाकाल के लिए निकाला जाना । ***''गर्भवती पर पीड़ा''*** अचानक आती है । इसी प्रकार से प्रभु के दिन को आनेवाला विनाश कहा गया है ।

५:४ ऐसा लगता है कि पौलुस यह सिखा रहा है, कि मसीही विश्वासी जब तक प्रभु का दिन आरम्भ न हो, तब तक पृथ्वी पर रहेंगे । यदि उसको यह विश्वास नहीं था कि कुछ लोग यहां रहेंगे, तो वह यीशु के आने पर अचम्भित न होने की बात क्यों कहता ? यदि वह यह विश्वास करता था कि उस समय कोई नहीं रहेगा, तो यह बताने का एक अच्छा अवसर था, बजाए इसके कि उन्हें ***''जागते रहने''*** (पद ६) के लिए कहा जाए ।

''अन्धकार में नहीं'' - प्रेरित २६:१८; २कुरि ४:६; कुलु १:१३

''आ पड़े'' - जो लोग चोर की राह देख रहे है, उस समय आश्चर्यचकित नहीं होगे जब वह आता है । विश्वासी ज्योति में हैं और स्वर्ग से परमेश्वर के पुत्र के प्रगट होने की प्रतीक्षा कर रहे हैं - तीतुस २:१३ । यदि ऐसा है तो वे इस घटना के घटने पर अचम्भे में नहीं पड़ सकते । लोगों को दिनांक बताने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए । बाईबिल उनके आने और युग के अन्त के कुछ चिन्ह देती है ताकि विश्वासी इसे आते हुए देख सकें (इब्रा १०:२५; २ थिस्स २:३,४; प्रेरित २:२०; मत्ती २४:२९,३३) ।

५:५ ***''ज्योति की सन्तान''*** - इफि ५:८; यूहन्ना १२:३६; मत्ती ५:१४

५:६ ***''सोते न रहें''*** - सोते हुए लोग यह नहीं जानते कि क्या हो रहा है या क्या होगा ।

''जागते'' - मत्ती २४:४२,४२; २५:१३

''सावधान रहें'' - यूनानी शब्द का अर्थ ''आत्म सयंम'' भी हो सकता है - प्रेरित २४:२५; गल ५:२३; १ पत ४:७' ५:८; २ पत १:६

५:७ रोमि १३:१३, १४; २ पत २:१३

५:८ ***''हम जो दिन के हैं''*** - पद ५ । विश्वासी उस नए दिन के है जो मसीह के आने पर आएगा - २ पत १:१९, प्रका. २२:१६ । वे पहले ही से दिन की ज्योति में चलते हैं ।

''झिलम'' इफि ६:१४ की झिलम से तुलना करें जहाँ इस धार्मिक कहा गया है । सभी मसीही गुण आपस में जुड़े हुए है । ***''मसीह''*** को पहनने से सभी को पहना जाता है । रोमि १३:१४ और इफि ४:२४; ६:१३ के नोट्स देखे ।

''टोप'' इफि ६:१७ देखें ।

५:९ ***''क्रोध''*** - १:१० के नोट्स देखे । ***''क्रोध'', ''उध्दार''*** के विपरीत है (यह महा संकट काल से बचना नहीं है) एक का अर्थ है पाप और पापियों पर परमेश्वर का क्रोध, दूसरे का अर्थ है पाप से स्वतंत्रता । इसलिए यह परमेश्वर के उस क्रोध से छूटना है जो पाप पर आता है ।

५:१० ***''हमारे लिए इस कारण मरे''*** -यूहन्ना १०:१५; रोमि ५:८; १ पत ३:१८ । यहाँ जागते, सोते रहने का अर्थ है जीवित रहना या मरना (३:१३) ***''सब मिलकर उसी के साथ जीएं''*** जीवित विश्वासी मसीह के जीवन के भागीदार हैं; और संगति करते हैं । (रोमि ६:५-८; १ यूहन्ना १:३) । जो विश्वासी स्वर्ग पहुँच चुके हैं वे उसकी उपस्थिति में हैं - २ कुरि ५:८; फिलि १:२३ ।

५:११ ***''शान्ति''*** - ४:१८ यह प्रत्येक विश्वासी का कर्तव्य और आशीष है ।

''एक दूसरे की उन्नति'' - रोमि १४:१९; १५:२; १ कुरि १४:३-५, १२,१७,२६; इफि ४:२९ ।

५:१२,१३ ***''तुम्हारे अगुवे हैं''*** १ तिमो ५:१७; इब्रा १३:१७; १ पत ५:१-३

''प्रभु में'' - मर ९:५०; रोमि १२:१६; २ कुरि १३:११; इफि ४:३; फिलि २:२; इब्रा १२:१४ ।

५:१४ ***''कायरों'' ''निर्बलों''*** - स्थानीय कलीसियाओं में हर प्रकार के विश्वासी पाए जाते है । किसी को भी तुच्छ नहीं समझा जाना चाहिए ।

५:१५ ***''बुराई के बदले बुराई''*** - रोमि १२:१७-२१ ।

५:१६ ***''आनन्दित''*** - फिलि ३:१; ४:४; रोमि १२:१२; हबक्कूक ३:१७,१८

५:१७ दूसरों को प्रार्थना करते रहने के लिए उकसाने से अधिक उसने स्वयं अधिक प्रार्थना की । वह स्वयं एक आदर्श था -१:३; २:१३; रोमि १:९,१०;इफि ६:१८; कुलु १:३; २ तिमो १:३ । वह प्रार्थना की सामर्थ और आशीष के बारे में जानता था । चाहे वह किसी भी कार्य में व्यस्त क्यों नहीं था, अपने मन को प्रभु के साथ रखता था । जब कोई व्यक्ति दूसरे कार्यों में लगा रहता है, सदैव यह संभव नहीं होता है

१८,१६, **हर बात** में आभार प्रकट करते रहो : क्योंकि तुम्हारे लिये मसीह यीशु में परमेश्वर की यही इच्छा है । **आत्मा** को न बुझाओ ।
२०,२१,२२**भविष्यद्वाणियों** को तुच्छ न जानो ।**सब** बातों को परखोः जो अच्छी है उसे पकड़े रहो । **सब** प्रकार की बुराई से बचे रहो ।
२३ **शान्ति** के परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी तरह से पवित्र करे; और तुम्हारे आत्मा और प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के
२४,२५, आने तक पूरे पूरे और निर्दोष सुरक्षित रहें । **तुम्हारे** बुलानेवाले, सच्चे, हैं, और वह ऐसा ही करेंगे । **हे भाईयो**, हमारे लिये
२६,२७ प्रार्थना करो । **सब भाइयों** को पवित्र चुम्बन से नमस्कार करो । **मैं तुम्हें** प्रभु की शपथ देता हूं, कि यह पत्र सब भाइयों
२८ को पढ़कर सुनाया जाए । **हमारे प्रभु** यीशु मसीह की असीम कृपा तुम पर होती रहे ।

कि प्रार्थना कर सके या मुँह से कुछ कहे । प्रार्थना अपने हृदय को परमेश्वर की ओर उठाना है चाहे ओठों से शब्द न भी निकलें । प्रार्थना से सम्बन्धित नोट्स और अन्य पद उत्पति १८:३२; मत्ती ६:५-१३; ७:७-१२; मरकुस ११:२४; लूका ११:१-१३; १८:१-८; रोमि ८:२६, २७; इफि १:१७; ६:१८; फिलि ४:६,७; कुलु १:६; इब्रा ११:६; याकूब १:५-८; ५:१६-१८; १ यूहन्ना ५:१४,१५; भजन ६६:१८ । ५:१८ इब्रा १३:१५; कुलु ३:१७; फिलि ४:६; इफि ५:२०; भजन ५०:१४; ११३:१; लैव्य ७:१२,१३ । ''हर बात में'' का अर्थ है; चाहे परिस्थितियाँ सुखदायक हों या नहीं, सुरक्षा हो या खतरे; आसान जीवन हो या कठिन । जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में सदा ऐसी बाते हैं, जिनके लिए धन्यवाद दिया जा सकता है । हमें इस बात का अभ्यास करना चाहिए । ''परमेश्वर की यही इच्छा है'' कुछ बातों में शायद हम परमेश्वर की इच्छा न जानें, किन्तु धन्यवाद देना परमेश्वर की इच्छा है ।

५:१६ ***''आत्मा को न बुझाओ''*** - परमेश्वर का आत्मा विश्वासियों के हृदय में गरमाहट, ज्योति और आत्मिक जोश देता है । किन्तु यह संभव है कि पाप, लापरवाही, हृदय की प्रार्थना-हीनता और आभार हीनता के कारण हम हृदय की अग्नि को बुझा दें । इफि ४:३०

५:२० ***''भविष्यद्वाणियां''*** - इसका अर्थ है कलीसिया के उन लोगों के द्वारा भविष्यद्वाणियाँ, जिनके पास यह आत्मिक योग्यता थी । देखें रोमि १२:६; १कुरि १२:१०; २८:१४:३ ।

५:२१ - ***''परखो''*** - १ कुरि १४:२६; १ यूहन्ना ४:१ । प्रत्येक भविष्यद्वक्ता या भविष्यद्वाणी प्रभु की ओर से नहीं है - मत्ती ७:१५; २ पत २:२; यिर्म १४:१४ । प्रत्येक बात जिसे लोग कहते हैं, परमेश्वर के वचन के प्रकाश में मापी जानी चाहिए ।

५:२२ - जिन बुरी बातों को लोग नहीं करना चाहते है, उनसे बचे रहना कुछ लोग अच्छी तरह से जानते हैं । कुछ भी बुरा करने में विश्वासियों को दिलचस्पी नहीं लेनी चाहिए ।

५:२३ - ***''शान्ति का परमेश्वर''*** - रोमि १५:३३; १६:२० । १ कुरिर १४:३३; फिलि ४:६, २ थिस्स ३:१६; इब्रा १३:२० ।

''पवित्र करे'' - यूहन्ना १७:१७-१६ के नोट्स देखे ।

''पूरी रीति'' - जबकि पौलुस उनकी अधूरी पवित्रता के लिए प्रार्थना नहीं करता, हमें स्वयं के लिए या किसी दूसरे विश्वासी के लिए भी यह प्रार्थना नहीं करनी चाहिए । अधूरी पवित्रता अधूरी अपवित्रता है । मत्ती ५:४८; १ कुरि १:२; २ कुरि ७:१

''निर्दोष'' - ३:१३ की आयतें देखे ।

५:२४ ***''सच्चा''*** - व्यव ७:६; ३२:४; १ कुरि १०:१३; २ थिस्स ३:३; २ तिमो २:१३; तीतुस १:२; १ यूहन्ना १:६

''वह ऐसा ही करेंगे'' - १ कुरि १:८,६; फिलि १:६ देखें ।

थिस्सुलुनीके के सभी विश्वासियों से यह प्रतिज्ञा की गयी थी, (वर्तमान के सब विश्वासियों से भी) कुछ एक विशेष पवित्र और आत्मिक समझदारी रखनेवालों लोगों से नहीं । ५:२५ रोमि १५:३०; इफि ६:१६ ।

५:२६ ***''चुम्बन''*** - रोमि १६:१६

५:२६ इस पत्र में दिए सत्य की आवश्यकता परमेश्वर के सम्पूर्ण परिवार को है । प्रेरित के निर्देषों की भी ।

५:२८ रोमि १:७; १६:२० ।